

# Diwali Puja

Date : 1st November 1986  
Place : Pune  
Type : Puja  
Speech : Hindi & Marathi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 05
Marathi	06 - 11
English	-

### II Translation

English	12 - 15
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

दिवाली के शुभ अवसर पे हम लोग यहाँ पुण्यपट्टणम में पधारे हैं।

न जाने कितने वर्षों से अपने देश में दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है। लेकिन जब से सहजयोग शुरू हुआ है, दिवाली की जो दीपावली है वो शुरू हो गयी। दिवाली में जो दीप जलाये जाते थे, वो थोड़ी देर में बुझ जाते हैं। फिर अगले साल दूसरे दीप खरीद के उस में तेल डाल कर, उस में बाती लगा कर दीपावली मनायी जाती थी। इस प्रकार हर साल नये नये दीप लाये जाते थे। दीप की विशेषता ये होती थी, कि पहले उसे पानी में डाल के पूरी तरह से भिगो लिया जाता था। फिर सुखा लिया जाता था। जिससे दीप जो है तेल पूरा न पी ले और काफ़ी देर तक वो जले। लेकिन जब से सहजयोग शुरू हुआ है तब से हम लोग हृदय की दिवाली मना रहे हैं। हृदय हमारा दीप है। हृदय में बाती है, शांत है और उसमें प्रेम का तेल डाल कर के और हम लोग दीप जलाते हैं। इस तेल को डालने से पहले इस हृदय में जो कुछ भी खराबियाँ हैं उसे हम पूरी तरह से साफ़ धो कर के सुसज्जित कर लेते हैं। ये प्रेम हृदय में जब स्थित हो जाता है, तब उसको हृदय पूरी तरह से अपने अन्दर शोषण नहीं कर लेता।

जैसे पहले कोई आपको प्रेम देता है, माँ देती है प्रेम, पिताजी देते हैं प्रेम और भी लोग आपको प्रेम देते हैं। उस प्रेम को आप लोग अपने अन्दर शोषित कर लेते हैं। जो प्यार पति से मिला, पत्नी से मिला, वो आपके रोम रोम में छा जाता है और अपने तक ही सीमित रहता है। उसका प्रकाश औरों को नहीं मिलता। एक अगर माँ अपने बच्चे को प्यार करती है, तो वो उस बच्चे तक और उस माँ तक ही सीमित रहता है। कभी कभी इसके विपरीत भी परिणाम निकल आते हैं। कोई माँ अगर अपने बच्चे को जरूरत से ज्यादा प्यार करती है तो बच्चा कभी कभी बुरा बर्ताव करता है। उसके व्यवहार में शुष्कता आ सकती है। धृष्टता आ सकती है। वो माँ को तंग कर सकता है। उसका अपमान कर सकता है। या कोई बच्चा अपने माँ के प्रति बहुत ज्यादा जागरूक हो, तो हो सकता है कि उसकी माँ उस पे हावी हो जाये। उसके सर पे सवार हो जाये। इसी प्रकार एक पति-पत्नी में भी जो प्रेम होता है वो अगर संतुलन से हट जाये, लेन-देन में फर्क पड़ जाये, तो उसके अनेक विपरीत परिणाम होते हुये देखे गये हैं। लेकिन सहजयोग का जो स्निग्धमय प्रेम है वो हृदय के इस दीप में भर दिया जाता है तो वो अपने तक सीमित नहीं रहता है। और उसमें जब दीप जल जाता है, जब आत्मा की ज्योत फैल जाती है, तो वो सारे संसार के लिये आलोकित करने का माध्यम है। उसकी ये शक्ति हो जाती है, उस हृदय की, कि वो सारे संसार को आलोकित करें। सारे संसार में प्रकाश फैलायें। सारे संसार का अज्ञान हटायें। सारे संसार में आनन्द फैलायें। यही एक मिट्टी का दीप हर साल तोड़ दिया जाता था, एक समर्थ, ऐसा विशेष दीप बन जाता है, कि कभी भी नहीं बुझता है और इस दीप से अनेक दीप जलते हैं। और वो जो दीप जलाये जाते हैं, कभी नहीं बुझते। ये कौनसी धातु का बनाया हुआ दीप है, ऐसा अगर कोई पूछे, तो कहा जायेगा, कि ऐसा तो कोई धातु है ही नहीं संसार में जो इस तरह के दीप बनायें। जो जलते रहें और दूसरों को भी आलोकित करते रहे और कभी भी नष्ट न हों। उल्टा अमर हो के सारे संसार में तारांगण बन के

चमक उठे। ऐसे अनेक दीप अकेले अकेले इस संसार में आये।

कहीं पर, आपने देखा है, कि बड़े बड़े संत-साधु हो गये। इस महाराष्ट्र भूमि में भी अनेक संत-साधु हो गये। अकेले अकेले कहीं बैठे हुये, धीरे-धीरे, धीमे-धीमे जलते रहे। लेकिन वो आज भी तारांगण बन के संसार में छाये है। लेकिन वो अकेले दीप थे, दीपावली नहीं थी। अकेले दीप थे। कभी-कभी एक-दूसरे से मिल लेते थे। लेकिन आज हमारी दीपावली है। आप लोग सब वही दीप है, जिनकी मैं व्याख्या कर रही हूँ, जिनका मैं वर्णन कर रही हूँ, वही सुन्दर दीप है। जो कि आलोकित हो गये और आलोकित होने के बाद दूसरे अनेक दीप जला रहे हैं। एक दीप से हजारों दीप जल रहे हैं। यही एक तरीका है, जिससे संसार का अंधःकार, अज्ञान सब नष्ट हो सकता है। लेकिन इसके अन्दर एक बात याद रखनी है, कि हम जिस तेल से जल रहे हैं, जिस स्निग्धता से जल रहे हैं, वो प्रेम है। वो निर्व्याज्य प्रेम है। वो निरपेक्ष प्रेम है। वो प्रेम किसी से चिपकता नहीं। वो कोई अभिलाषा नहीं रखता। वो कोई प्रतिकृति नहीं चाहता। वो अविरल इस दीप को जलाये रखता है। अत्यन्त सुन्दरता से। ऐसे दीप की कांति आपके मुखराविंद पे भी छा जाती है। आपकी आँख से ये दीप चमकते हैं।

सहजयोगी की आँखें, आप अगर कभी देखें तो हीरे जैसी चमकती हैं। ऐसे हिरे में अपनी ही ज्योत होती है। इसी प्रकार एक सहजयोगी की आँख के अन्दर अपनी ही एक दीपशिखा होती है, जो झिलमिल, झिलमिल चमकती रहती है। ये सब कायापलट हो गया। पत्थर के हृदय में एक ऐसा अनूठा सा दीप जल गया। एक मिट्टी की दीप की जगह एक अविनाशी, अक्षय ऐसा एक दीप जल गया। हृदय जो कि छोटी छोटी बात में रो पड़ता था। जो छोटी छोटी सी हानि से ही ग्लानि प्राप्त होता था। वो हृदय आज एक बलवान दीपक बन गया है। जो कि सुख या दुःख के थपेड़े से नहीं डरता है और ना ही किसी लाभ या हानि की ओर देखता है। उसका कार्य है अंधःकार को दूर करना और बड़ी हिम्मत के साथ। वो इस बात को जानता है कि वो एक विशेष दीप है, एक विशेष रूप में है। 'और वो एक विशेष रूप का मेरे हृदय में दीप जला हुआ है इससे मैं अनेक लोगों का दीप जला सकती हूँ।' उसको ये पूर्ण विश्वास हो गया है। और उस दीप के उजाले में वो अपने भी दोष अगर देख ले, उसे वो छोड़ देता है। उसे एकदम छोड़ देता है। धीरे धीरे उसका भी जीवन अत्यंत प्रकाशमय हो जाता है। और हृदय में बसा हुआ प्रकाश सारे अंग अंग से, उसकी आँख से, उसके मुख से टपकता है। उसका सारा जीवन प्रकाशमय हो जाता है। और उस प्रकाश से वो आंदोलित हो जाता है। उसके तरंगों में बैठ कर के आनंदित होता है। अपने ही अपने मन में मुस्कुराता हुआ, अपने ही मन को सोचता है कि मैं कितना सुन्दर हो गया हूँ। कितनी सुन्दरता मेरे अन्दर से बह रही है। पहली मर्तबा एक मानव अपने से पूर्णतया संतुष्ट हो जाता है।

असंतोष मनुष्य में तब आता है, जब वो अपने संतुष्ट नहीं होता। अगर आप कहें कि आज हमारे पास एक चीज़ नहीं है। इसलिये आप असंतुष्ट हैं। कोई बात नहीं। कल दूसरी चीज़ आ जायेगी। उससे आप असंतुष्ट हो जायेंगे। आप असंतुष्ट ही रहेंगे। संतोष आप जब अपने में संतुष्ट होंगे तो फिर आपको वो बाहर खोजना नहीं पड़ेगा। और ना वो कभी आपको बाहर मिल सकता है। संतोष आपको अपने अन्दर, अपने ही आत्मा से प्राप्त हो सकता है। ये प्रकाश आज हम लोग देख रहे हैं कि कितना बढ़ गया है। विशेष कर महाराष्ट्र में इसका प्रचार ज़्यादा हुआ है। और पुणे इस महाराष्ट्र का हृदय है। ये महाराष्ट्र का हृदय है। और इस हृदय में जो आप लोग आये हुये हैं, तो आज

जाते वक्त अपने साथ बहुत सारा प्यार लेते जाईये। ये प्यार आपको वो प्रकाश देगा जो चिरंतन तक, अनंत तक आपके अन्दर सुन्दरता की लहरें उत्पन्न करता रहेगा। और आपका मार्गदर्शन करता हुआ आपको एक ऐसे आदर्शों तक पहुँचा देगा जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। जिसको आप सोच भी नहीं सकते, कि आप ये सब कर सकते हैं।

आपने बहुत बड़े बड़े महान लोगों के बारे में सुना होगा। इन सब से कहीं अधिक आप लोग कार्य कर सकते हैं। इनसे कहीं अधिक आसानी से ऊँचे ऊँचे शिखर तक पहुँच सकते हैं। फर्क इतना ही है कि उनकी महत्वाकांक्षायें जो थी उससे लड़ते लड़ते, जूझते जूझते वो लोग तंग आ गये थे। लेकिन आप अपना रास्ता इतना सुगम, सुरक्षित और आलोकित पाईयेगा, कि उसमें किसी भी प्रकार की आपको अडचन नहीं। सिर्फ याद रखने की बात एक ही है, कि ये प्रेम का दिया है। ये दीप प्रेम ही से जल सकता है और किसी चीज़ से नहीं। जो भी आप कार्य करते हैं वो आप प्रेम से करें। जब आप किसी को शिक्षा देते हैं, जब आप किसी को सहजयोग के बारे में समझाते हैं तब ये सोच लेना चाहिये कि क्या मैं इन को इसलिये समझा रहा हूँ कि मुझे इनसे प्रेम है। इनके प्रति प्रेम है और मैं चाहता हूँ कि जो कुछ मैंने पाया वही ये भी पा लें। क्या मैं यही विचार से इनको समझा रहा हूँ। या मैं इसलिये समझा रहा हूँ कि मैं कुछ ज़्यादा इन लोगों के बारे में जान गया हूँ। और मैं काफ़ी अच्छे से बातचीत कर सकता हूँ और मैं इन सब लोगों के बुद्धि पर छा सकता हूँ। तो इस तरह की बात सोच कर अगर कोई सहजयोग चाहे तो फैलाये, तो नहीं हो सकता। धीरे धीरे, आराम से, जैसे कि चन्द्रमा की चाँदनी धीरे धीरे फैलती है और उस पे सभी चीज़ एक स्पष्ट रूप से दिखायी देने लगती है। इसी प्रकार आपका बर्ताव दूसरों के प्रति होना चाहिये। उसमें किसी भी प्रकार का आक्रमण, किसी भी तरह की भिरुता, दिखने की जरूरत नहीं। हाँ, एक बात है, इस दीप को संजोना चाहिये, सम्हालना चाहिये। उसकी ओर ऐसी नज़र होनी चाहिये, जैसे एक बहुत ही महत्वपूर्ण चीज़ को हमने पाया हुआ है। और ये अभी अगर बाल्य स्वरूप में है तो इसे धीरे धीरे हमें आगे बढ़ाना है। उसके प्रति बड़ा आदर और एक तरह की प्रतिष्ठा होनी चाहिये, कि आज हम सहजयोगी हैं।

अगर आप सहजयोगी हैं तो हमारे अन्दर विशेष गुण होने चाहिये। इसलिये नहीं, कि हम गलत काम करेंगे तो हमें कोई दुर्घटना उठानी पड़ेगी। या हमें कोई नुकसान हो जायेगा। या परमात्मा हमें कोई किसी तरह का दण्ड देगा। इस भय से सहजयोग नहीं करना है। आनन्द से और प्रेम से सहजयोग में उतरना है। एक मजे की चीज़ है कि हमें माँ ने पानी में तैरना सिखा दिया है और अब हम इस पानी में तैर सकते हैं। डूबेंगे नहीं। कोई भी भय, आशंका मन में न रखते हुये, हमें उस प्रेम को जानना चाहिये। जानना चाहिये कि ये क्यों हमारा हृदय है। एक मुठ्ठीभर का हृदय है। इस हृदय में ये सागर कहाँ से आया। अजीब सी चीज़ है, कि देखा जाता है कि इस छोटे सी मुठ्ठी में पूरा सागर सा, पता नहीं कहाँ से समाये चला जा रहा है। और जितना जितना उसके सूक्ष्म में आप उतरेंगे तो देखेंगे कि इस छोटे से हृदय में कितनी सुन्दर भावनायें दूसरों के प्रति, समाज के प्रति में आयेंगी। इतनी उदात्त भावनायें, इतनी महान भावनायें कि जिनसे संसार का हम लोग पूरी तरह से उद्धार कर सकते हैं।

मैं देखती हूँ की सहजयोग में बहुत लोग आ गये हैं। बहुत ज़्यादा लोग भी आ जायेंगे। और आना चाहिये।

लेकिन हर आदमी को एक विशेष रूप धारण कर के, एक विशेष समझ रख के आना चाहिये। ये नहीं कि सब लोग बैठे हैं तो हम चले गये सहजयोग में। आप एक विशेष हैं। और आप जो सहजयोग में आये हैं, आपका कोई न कोई इसमें विशेष काम होगा। अभी देखिये एक छोटी सी चीज़ खराब हो जाने से ही ये यंत्र नहीं चलता था। इस का हर एक छोटा छोटा पुर्जा भी कितना महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार हर इन्सान जो भी सहजयोग में आता है, वो स्त्री हो या पुरुष हो, अत्यंत महत्वपूर्ण है। और हर एक को चाहिये कि हम अपनी तबियत ऐसी रखें जिससे हमारी जो ये यंत्रणा है, जो परमात्मा ने यंत्रणा बनायी है, वो ठीक से चल पड़े। हमारे जीवन की ओर लक्ष देना चाहिये कि हमने जीवन में जो गलतियाँ की हैं और जिस तरह से अपने अन्दर षडरिपु एकत्रित किये थे, वो एक एक कर के छोड़ देना चाहिये। वो बहुत ही आसान है। क्योंकि आप अपने अन्दर बसे हुये साँप को देख सकते हैं। जब तक प्रकाश नहीं था आपने हाथ में साँप पकड़ लिया था। जैसे ही प्रकाश आ गया साँप गिर जाता है। आप जैसे ही अपने को देखना शुरू कर देंगे, इसी सुन्दर प्रकाश में आप वो भी देख सकते हैं कि जो आपकी सुन्दरता है और वो भी देख सकते हैं जो आपकी कुरूपता है। उस कुरूपता को एकदम से ही छोड़ देना चाहिये। आज छोड़ेंगे, फिर कल छोड़ेंगे, फिर कोशिश करेंगे, ऐसे आधे लोगों से ये काम नहीं होने वाला।

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## MARATHI TALK

मराठीत म्हणतात, 'त्याला पाहिजे जातीचे,' आणि जात कोणती, तर सहजयोगाची. आपली एकच जात आहे. आपली जात एक आहे. असे म्हणतात, 'या देवी सर्वभूतेषु, जातिरूपेण संस्थिता।' सगळ्यांच्यामध्ये आहेत जाती. अनेक जाती आहेत. देवीने अनेक जाती केल्या. एक अशी जात आहे, की जे लोक परमेश्वराला विचारतसुद्धा नाही. ती एक जात आहे, जाऊ देत. दुसरी एक जात आहे, जे नेहमी परमेश्वराच्या विरोधात असतात. ती एक जात आहे, जाऊ देत. तिसरी एक जात आहे, ज्यांना भलते धंदे जास्त आहेत आणि परमेश्वर नको. ते ही आहेत, जाऊ देत. असेही लोक आहेत जे परमेश्वराच्या नावावर नुसते कर्मकांड करत बसले आहेत. अनेक जन्म केले आणि अजूनही करतच आहेत. त्यांचं ते ही सुटत नाही. कितीही सांगितलं तरी सुटत नाही. जाऊ देत. ते ही आहेत. त्याहून असे ही लोक आहेत की जे खरोखर परमेश्वराला शोधत आहेत. त्यांची बुद्धी त्याबाबतीत अगदी शुद्ध आहे आणि स्पष्ट रूपाने त्यांना दिसतय की परमेश्वर मिळवणं म्हणजे काय! हे लोक आपल्या जातीतले आहेत. आपल्या जातीत येऊ शकतात.

प्रत्येक माणसाशी सहजयोग वर्णिता येत नाही. सहजयोगाला समजण्यासाठीसुद्धा एक विशेष पद्धतीचे लोक पाहिजेत. सहजयोगी सहजयोग मिळाल्यानंतर सर्व तऱ्हेच्या लोकांना जाऊन भिडतात. काही श्रीमंत माणसं असतात. 'माताजी, ते फार श्रीमंत लोक आहेत. तुम्हाला भेटायची इच्छा आहे.' 'बरं मग पुढे काय!' 'ते म्हणतात आम्हाला एकदा मातार्जींना भेटू द्या.' 'मग त्यांना काय पाहिजे?' 'काही नाही, ते भेटायचं म्हणतात.' मी म्हणते, 'अहो, राहू देत, त्यांना अजून थोडसं बघू द्या.' लोकांना समजत नाही, असं कसं माताजी म्हणाल्या? एवढे श्रीमंत आहेत. कारण त्या लायकीचे नाहीत ते. पैसे आले म्हणून लायकी येत नाही. दुसरे लोक आले. म्हणे, फार मोठे पॉलिटिशियन आहेत. तुम्ही भेटा. म्हटलं, दुरून नमस्कार! मला वेळ नाही. एक साधी बाई आली तर माताजी उठून आल्या भेटायला. हे असं कसं? अहो, जे तुम्हाला साधे दिसते, सामान्य दिसते, तेच आम्हाला असामान्य वाटते त्याला आम्ही तरी काय करणार? आमचं जसं डोकं आहे तसेच आम्ही चालणार आहोत की नाही! तसेच सहजोगाचंसुद्धा डोकं असायला पाहिजे. बेकारच्या लोकांकडे आपला वेळ दवडू नये. जी मंडळी परमेश्वराला शोधत आहेत आणि जी परमेश्वराच्या चरणी जायला, लीन व्हायला तत्पर आहेत, अशाच मंडळींकडे जावे.

आता हा दीप तुम्ही लावला आणि इतके दिवे लावले, पण समजा एखाद्या दारूड्या माणसाला दिवा दाखवला किंवा ज्याला भुतं लागली आहेत अशा माणसाला दिवा दाखवला, तर तो तुम्हालाच खायला धावेला. तर त्याला दिवा दाखवण्याची गरज काय? जगात पुष्कळ लोक आहेत जे खरोखर जाणतात की ते अंधःकारात आहेत आणि त्यांना परमेश्वराला भेटायचे आहे. पण असे ही पुष्कळ लोक आहेत, की देवाला कशासाठी भेटायचं तर आम्हाला काही तरी त्यातून भौतिक लाभ झाला तर बरं होईल. आता सांगायचं म्हणजे असं की भौतिक लाभ होतो, त्याबद्दल शंका नाही. आज इकडे लक्ष्मीपूजन आपण इथे करीत आहोत त्याला हेच कारण

आहे, की जी पुण्याची अलक्ष्मी आहे त्याला तोंड दिलं पाहिजे. त्याच्यावर मात केली पाहिजे. त्याच्याशिवाय पुण्यातली, या पुण्यभूमीतील अलक्ष्मी जाणार नाही. त्यातलं मुख्य कारण काय असलं पाहिजे बरं!

अलक्ष्मी असण्याचं मुख्य कारण म्हणजे पुण्याला जितके मारूती आहेत आणि जितके गणपती आहेत, तिथे इतके लोक जाऊन बसलेले आहेत, की ह्या सगळ्यांची आधी उचलबांगडी केली पाहिजे. हे लोक जे मध्ये बसून देवाच्या नावावर पैसे खातात आणि तुमच्या डोक्याला टिळे लावतात, ते टिळे लावणं बंद केलं पाहिजे. 'मोठं कठीणच काम दिसतं माताजी हे!' आहेच, पण सहजयोगात इलाज आहेत ह्या लोकांचे. अनेक इलाज आहेत. ते इलाज आपण केले पाहिजेत. शिकलं पाहिजे. पण हे लोक इथे बसून सगळ्यांची आज्ञा चक्रं खराब करतात, त्या आज्ञा चक्रावरून प्रहार करून जो मनुष्य जागरूक असेल त्यालासुद्धा नष्ट करतात. तेव्हा हे साधे दिसणारे लोक आहेत त्या लोकांकडे लक्ष दिलं पाहिजे. ज्या देशांमध्ये हे असले लोक कार्यान्वित असतात, त्या त्या देशामध्ये गरिबी येते. कारण ही सगळी मंडळी प्रेतविद्या आणि स्मशानविद्या ह्याची कार्यं करीत असतात. बसतात देवाच्या देवळात. त्यांना देवाची काही भीती नसते. देवाच्या देवळात बसून प्रेतविद्या आणि स्मशानविद्या करतात.

कोलकाताला मी गेले. तेव्हा तिथली स्थिती बघून मला वाटलं आता इथे सहजयोग होतो की नाही होत. जो मनुष्य आला त्याला बघते तर काही ना काही तरी बाधा! गरिबी म्हणजे इतकी झालेली आहे कोलकाताला, इतकी गरिबी आहे, की एखादे उजाडलेले मोठे गाव असावे आणि अशी अनेक गावं मिळून एखादा जर प्रांत तयार केला, ती कोलकाताची स्थिती आहे. त्या लोकांना मी विचारलं, 'तुमचं असं कसं? तुम्ही गेले होते का?' 'हो,' म्हणे, 'आम्ही दीक्षित आहोत.' तिथे दीक्षित नाही म्हणत दीखित म्हणतात. सगळी मंडळी दीखित. इथून तिथपर्यंत सगळे दीखित लोक. म्हणून दीखित बरोबर दुःखी लोक असणारच. पण त्यांना सांगायची सोय नाही, की बाबा रे, तुम्ही हा दीखितपणा करीत आहात हे बरोबर नव्हे. हे लोक सगळे उपटसुंभ आहेत. बरं नुसते पैसे घ्यायचे असते तर हरकत नाही. पण त्याशिवाय जे नाना प्रकार ते करतात, ते म्हणजे अत्यंत जालीम आहेत. प्रत्येक देवस्थानी असा गोंधळ असतो. प्रत्येक देवस्थानी! तुम्ही जेरूसलेमला जा, नाहीतर मक्क्याला जा आणि नाही तर महालक्ष्मीच्या देवळात जा. प्रत्येक ठिकाणी हे प्रकार आपण करतो. त्याने अलक्ष्मी येते. लक्ष्मीचं असं आहे, की इकडून बाधा आली की ती चालली बाहेर.

दुसरी गोष्ट व्यसन. व्यसनाच्या अधीन असल्यावरती लक्ष्मी कधीही घरात राहणार नाही. असं म्हणतात की, 'इकडून बाटली आली की तिकडून बाई चालली बाहेर.' नुसतच बाटलीच नाही. अनेकतऱ्हेची आपल्याला व्यसनं आहेत. आता सहजयोगाने सर्व व्यसनं सुटतात. ही गोष्ट खरी आहे. थोडीशी जर अशी मेहनत केली तर सर्व व्यसनं सुटतील. जर व्यसनं असली तर लक्ष्मी तर जाणारच, पण यशसुद्धा आयुष्यात कधी येणार नाही. तुमचं जे यश आहे तेसुद्धा संपुष्टात येणार, लक्ष्मी गेल्याबरोबर. राजलक्ष्मी गेली, गृहलक्ष्मी गेली, कोणत्याही नादाला जर मनुष्य लागला, कोणत्याही मोहाला जर मनुष्य बळी पडला, तर लक्ष्मी घरातून उठते. ती घरात टिकणार नाही. तुम्ही कितीही दिवे लावा, पण ती काही आत येणार नाही. कारण तुम्हाला दिसत नाही काय आहे ते घरात. तिला दिसतं, तेव्हा ती बाहेरच्या बाहेरच राहणार. तुम्ही कितीही मेहनत केली, तुम्ही कितीही लक्ष्मीची आरती केली, सुक्त म्हटली, काहीही केलं, काही फायद्याचं नाही. उलट सांगणारे जे आहेत त्यांचे खिसे भरत आहात



तुम्ही. हे करा, ते करा, त्यातच तुमची सगळी स्थिती होणार. तेव्हा पहिल्यांदा असे काही जे विचार आहेत, ज्याने आपण ह्या अशा लोकांच्याकडे जातो किंवा वाममार्गाकडे जातो, ते विचार आपण टाकून दिले पाहिजे.

आता तुम्ही असे म्हणाल, तुकारामांच्याकडे काही लक्ष्मी नव्हती. असं कसं. तुकाराम काही श्रीमंत नव्हते. असं तुम्ही म्हणाल. आता वरून बघितलं तर तुकाराम श्रीमंत नव्हते असं दिसेल. सगळ्यांना असं वाटेल, त्यांच्याकडे दागदागिने नव्हते, काही नव्हतं मग लक्ष्मी कशी? त्यांच्याकडे काही लक्ष्मी नव्हती. पण किती श्रीमंत होते हे बघायचं असलं तर त्यांच्या चरित्राकडे बघा, जेव्हा शिवाजी महाराज सगळे दागदागिने घेऊन त्यांच्या दारावर पोहोचले. तेव्हा त्यांनी शिवरायांना सांगितलं, 'आम्ही शेतकरी. आम्हाला हे करायचं काय? हे तुमच्याजवळ राहू द्या. तुम्ही राजे लोक तुम्ही वापरा हे.' म्हणजे केवढा श्रीमंत असला पाहिजे हो तो! आपल्याकडे असा एखादा श्रीमंत बघा, जो फार मोठा श्रीमंत असेल, त्याला जर तुम्ही एखादा दागिना द्यायला गेलात तर त्याला मोह होईल की नाही. असा कोणताही श्रीमंत मला दाखवा ज्याला मोह होणार नाही. एक आमचं सोडून द्या. बाकीचे. ज्याला मोह वाटतो, जो अशा गोष्टींकडे लक्ष देतो, आणि हे मला मिळालं पाहिजे, ते मला मिळालं पाहिजे. हा मुलखाचा भिकारी झाला आणि श्रीमंत लोक जास्तच असतात भिकारी! एक दोन पैशाची कुठे वस्तू राहिली, तर 'अरे एक दोन पैशाची वस्तू राहिली,' म्हणून धावत येतील परत. म्हणजे श्रीमंत आहेत का भिकारी आहेत हे कोणी ठरवायचं. तेव्हा जे लोक मनाने श्रीमंत आहेत ते खरे श्रीमंत आहेत सहजयोगात.

ज्या लोकांच्या घरी जावं, तिथे घरात काही नसलं तरीसुद्धा प्रेमाने, 'माताजी, आमच्याजवळ जे आहे ते एवढेच आहे. आम्ही तुमच्यासाठी काही केलं नाही. थोडी भाकरी आहे. घेता का?' केवढा श्रीमंत वाटतं ते! जे घरात होतं नव्हतं ते आणून पुढे ठेवलं. ते प्रेमाने, गोड मानून खायचं. त्यात खरी श्रीमंती त्यांची दिसून येते, की जे आहे घरी ते सगळं पुढे आणून ठेवलं. तेच एखाद्या श्रीमंताच्या घरी जा. अर्थ बंद करून ठेवतील. 'तुम्ही घेता का चहा?' घेत असलात तर घ्या. नाही तर ठीक आहे. नसेल घेत तर परत. हे कसले श्रीमंत! त्या शबरीने रामाला जी बोरं आणून दिली, रामाला काय खायला नव्हतं की काय? त्या बोराचं त्यांनी एवढं महत्त्व केलं. त्यातच सिद्ध होतं की एवढी श्रीमंत ही शबरी! पाहुणचाराला आले तर त्यांनी तिचा मान ठेवून उष्टी बोरं खाल्ली. ही अशी श्रीमंती जी आली ती खरोखर लक्ष्मीची श्रीमंती आहे. पैसा असो वा नसो मनुष्य श्रीमंत असू शकतो. आपल्या बादशाहीत राहू शकतो.

पण चला सहजयोगात ते ही मना आहे. तुम्हाला आम्ही कोणी शबरीच्या स्थितीला नेत नाही. सहजयोगात लक्ष्मी ही मिळणारच. म्हणजे अगदी लक्ष्मीच! ती सगळ्यांना मिळणार त्याबद्दल शंका नाही. त्याला एवढ्यासाठी नाही की तुम्ही भिकारी आहात. पण जगाला दिसलं पाहिजे. जर जगाला असं दिसलं, की तुम्ही सहजयोगात येऊन गरीब झाले तर कोणी सहजयोगात येणार नाही. त्यांना प्रलोभन देण्यासाठी लक्ष्मी तुम्हाला दिलीच पाहिजे. त्याबद्दल शंका नाही. त्याशिवाय त्या आंधळ्यांना दिसायचं नाही. म्हणून लक्ष्मी दिलीच पाहिजे आणि मिळणार. नाभी चक्र उघडल्याबरोबर लक्ष्मी मिळू शकते. पण नाभी चक्रामध्ये लक्ष्मीचं जे स्थान आहे, त्यातलं पहिलं गृहलक्ष्मीचं स्थान आहे. आपण असेही म्हणू की तुकारामाची बायको म्हणजे अगदी जहाल बाई होती. जरा नम्र असती आणि देवाला तिने मानलं असतं तर कदाचित त्यांच्या घरी लक्ष्मी आली असती. तर घरातील गृहलक्ष्मी



कशी आहे त्याच्यावरून लक्ष्मी येणार. तिला जर बाधा असती आणि नवरा तिच्या बाधितपणालाच बळी जात असला तर घरात कधीच लक्ष्मी राहणार नाही. पण ती जरी बाधित असली आणि नवऱ्याने सांगितलं, की ही तुझी बाधा गेलीच पाहिजे किंवा नवरा दारू पितो तरी ही बाई आपली पतिव्रता बनून, 'दारू पाहिजे ना तुला माझे दागिने घे तू.' 'बरं, मग.' 'माझ मंगळसूत्र घे. जे पाहिजे ते घे तू. मी पतिव्रता आहे फार मोठी!' अस म्हणून आणखीन त्याला नरकात ढकलत असते. अशांच्या घरी कधीही लक्ष्मी राहू शकत नाही. गृहलक्ष्मी म्हणजे एक तेजस्वी स्त्री असायला पाहिजे. तिचं असं आयुष्य असायला पाहिजे, की जिला बघून पुरुषाला ही वाटलं पाहिजे की 'काहीतरी घरात आहे बरं का! काहीतरी असं तसं आम्ही वेडवाकडं केलं तर चालायचं नाही घरात.' पूर्वी पुरुष लोक बायकांना 'मालक' म्हणत असत, 'साहेब' म्हणत असत. एक दरारा असायचा अशा बायकांचा. तो कशामुळे? आरडाओरडा करून नाही झालेला. पण एक त्या बाईच्या तेजस्वितेने असेल. तिची उदात्तता, तिचं गांभीर्य, तिची दानशूरता, तिची निष्ठा, तिची सेवा, तिचं प्रेम ह्या सगळ्या गोष्टींनी त्या बाईला एक प्रकारची तेजस्विता आणि चारित्र्य दिलं आहे. ती गोष्ट सुटून आजकाल गृहलक्ष्मी म्हणजे, त्याला नाव म्हणजे, आजकालच्या गृहलक्ष्मींची कशाशी तुलना करायची तेच मला समजत नाही. कारण त्यांच्या डोक्यात काय आहे, तेच कळत नाही मला. नवऱ्याची, किंवा घरातील मुलांची, सासू-सासऱ्यांची, सगळ्यांची सेवा केली पाहिजे. हे कबूल. पण त्याचा अर्थ असा नव्हे की त्यांच्या घाणेरड्या गोष्टी, त्यांच्या मूर्खासारख्या गोष्टी त्याला मान्यता द्यायची किंवा त्यांना खुश करण्यासाठी वाटेल ते काम करायचं. वाटेल त्या मार्गाने जायचं. वाटेल तसं वागायचं. 'मग नवरा आहे, माताजी.' 'मग काय झालं?' 'नवराच आहे.' 'असं का!' नवरा आणि तुम्ही.... सांगत नाही मी, पण समजलं तुम्हाला.

ह्या गृहलक्ष्मीची स्थिती एखाद्या कमळासारखी असायला पाहिजे. कमळ हेच गृहलक्ष्मीचं स्थान आहे. नेहमी पाण्यावर, सुगंधित, अत्यंत नाजूक आणि लक्ष्मीला संबंध आधार अशी असणारी. ही कमळासारखी व्यक्ती असायला पाहिजे. ती राजलक्ष्मी असायला पाहिजे. दारोदार भीक मागणे, 'आज द्या हो तुमची साडी नेसायला म्हणजे बरं होईल.' 'कुठे निघालात तुम्ही?' 'नाही मला दाखवायचं आहे लोकांना असं.' कोणत्याही प्रकारची खोटी घमेंड किंवा कोणत्याही प्रकारचा लपंडाव, त्याची एक आढ्यता, त्याची एक ऐट ही स्त्री मध्ये असली म्हणजे तिच्यात राजलक्ष्मी विराजमान होते, (जणू तिला असं वाटतं). खरोखर लक्ष्मीपूजन म्हणजे स्त्रियांवरच लेक्चर द्यावे लागत आहे, असं तुम्हाला वाटत असेल. पण तशी गोष्ट नाहीये.

तिसरी म्हणजे गजलक्ष्मी. गजलक्ष्मी म्हणजे, आपले जे गणपती आहेत, गणपतीचे म्हणजे जे विशेष स्वरूप आहे, म्हणजे तो अत्यंत निष्पाप आहे. तसं निष्पाप असायला पाहिजे. (गणपतीला) अत्यंत तीक्ष्ण बुद्धी असूनसुद्धा. जसं हत्तीला हे समजतं की चांगलं काय आणि वाईट काय! सुबुद्धी म्हणजे अगदी तल्लख आहे त्याची. चालतांनासुद्धा धावतपळत चालणार नाही. पुष्कळशा बायकांना मी बघते त्या बायकांसारख्या चालतच नाही, घोड्यासारख्या चालतात. आणि एवढी धावपळ, हे धर रे, ते धर रे, हे धाव रे, ते धाव रे. मला परवा कोणीतरी प्रश्न विचारला, 'लहान मुलांना ब्लड कॅन्सर कसा होतो?' म्हटलं, 'त्यांच्या आईला जाऊन बघा. ती धावपळी असेल.' धावपळ करणाऱ्या ज्या बायका आहेत त्यांच्याकडे गजलक्ष्मी असू शकत नाही. पण त्याचा

अर्थ असा नाही, की काही करायचं नाही. जे करायचं ते सुबक आणि सुंदरतेने करायचं. एवढा मोठा हत्ती आहे, त्याला जेव्हा लक्ष्मीला हार घालायचा असतो, सोंडेत व्यवस्थित घेऊन, गळ्यात कसा व्यवस्थित घालतो आणि जरासुद्धा कुठे स्पर्श होऊ देत नाही. ही सुबकता त्याला सुगुण असं गृहिणी म्हणतात, ती यायला पाहिजे.

आता हे सगळं जरी झालं तरी जर पुरुषांना बायकांची इज्जत नसली आणि ह्या गोष्टींची इज्जत नसली तर घाणेरड्या बायकांच्या मागे ते धावतात किंवा रस्त्यावरच्या बायकांना महत्त्व देतात किंवा एखाद्या जबरदस्त बायकोला ते घाबरतात. तर अशा पुरुषांच्या घरी लक्ष्मी राहू शकत नाही. जे आपल्या पत्नीला, जी सुपत्नी आहे, तिला त्रास देतात त्यांच्या घरी लक्ष्मी राहू शकत नाही. पुरुषांना असं वाटतं जेवढी काही अब्रू वगैरे आहे ती बायकांनाच असते, पुरुषाला काही अब्रू वगैरे नसते. तो कसाही वागला तरी तो धार्मिकच असतो. त्याला असं वाटतच नाही की दुसऱ्यांकडे वाईट नजरेने पाहणे हे अधार्मिक आहे. असं पुरुषाला वाटतच नाही, म्हणजे रियलायझेशनच्या आधी. सहजयोगानंतर तुमचे डोळेच असे फिरतात उलटे. तुमच्या डोक्यातच हे विचार येत नाहीत. हे मोहाचे विचारच येत नाहीत असेच डोळे फिरतात. म्हणजे ह्या सगळ्या लक्ष्मी तुमच्यामध्ये जागृत झाल्या! कुठेही उभे राहिलात तरी तुमचे चित्त कधीही पडणार नाही. जशी ज्योत नेहमी वर उठते, तसेच तुमचं चित्त नेहमी परमेश्वराकडेच राहणार. अशी स्थिती आली म्हणजे लक्ष्मी तुमच्या घरी येणार. ते अनेक प्रकार आहेत.

नरसिंह भगतची हुंडी पटवली ते माहिती असेलच आपल्याला. कृष्णाने सुदामाची द्वारका बांधली. द्वारिकेतून जाऊन त्याची सोन्याची घरं बांधली. ते माहिती असेल आपल्याला. द्रौपदीचे वस्त्रहरण होत असतांना श्रीकृष्णाने तिच्या लज्जेचे रक्षण केले हे ही माहिती असेल आपल्याला. ह्या सर्व चमत्कार गोष्टींनी तुम्ही परिपूर्ण रहाल. अत्यंत चमत्कारपूर्ण जीवन असेल. रोज नवीन नवीन चमत्कार, तुम्हाला आश्चर्य वाटेल, कशा तऱ्हेने चमत्कार तुमच्यासमोर येतात. तुम्हाला आशीर्वादित करतात. ही सगळी लक्ष्मीचीच कृपा आहे. हे सगळे आशीर्वाद म्हणजे लक्ष्मीची कृपा आहे. अनेक तऱ्हेचे आशीर्वाद असतात.

परवा मी एक साडी घेतली विकत. तीन हजार रुपयांना मिळाली. ती दुसऱ्या माणसाला दाखवली, तर तो म्हणतो, बाजारात ह्याची कमीत कमी किंमत पंधरा हजार असायला पाहिजे. म्हटलं, 'नाही, आम्हाला तर ही तीन हजारतच मिळाली.' ही लक्ष्मीची कृपा म्हटली पाहिजे. दुसरा येऊन सांगतो, 'माताजी, बघा. माझ्याजवळ पैसे नव्हते. मी अस ठरवलं गणपतीपुढ्याला यायचं, तर कसं काय येणार. माझ्याकडे पैसे नव्हते.' तर लगेच टपालाने पत्र आलं की, 'तुझे एवढे पैसे वाचले होते. ते तुला परत पाठविले आहेत.' हे सगळं एक पैश्याच्या दृष्टीने झालं. पण तशा अनेक आहेत. तुमची तब्येत खराब झाली. तुम्ही म्हटलं, 'माताजी, माझी तब्येत खराब झाली.' झालं उद्या ठीक. 'अहो, कसं काय झालं?' डॉक्टर म्हणतात, 'असं कसं शक्य आहे? आम्ही विश्वासच ठेवू शकत नाही. असं कसं झालं.' ही लक्ष्मीची कृपा आहे. 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' जे श्रीकृष्णाने म्हटलेले आहे. त्यातला जो क्षेम भाग आहे तो लक्ष्मीच्या कृपेने होतो. सर्व तऱ्हेचं क्षेम असतं. नुसतं आर्थिकच नाही. जर आर्थिक असलं, समजा, तुमची तब्येत ठीक नसली, तर डॉक्टर तुमचं सगळं आर्थिक घेऊन जाणार. सर्वतऱ्हेने, प्रत्येक तऱ्हेचं क्षेम घटित होतं आणि त्याची सगळी गोळाबेरीज म्हणजे तुमच्यामध्ये महालक्ष्मी तत्त्व जागृत होतं आणि महालक्ष्मी तत्त्व म्हणजे परमेश्वरामध्ये रममाण होण्याची इच्छा.

महालक्ष्मी म्हणजे हे सर्व जे काही तुम्हाला मिळालेले आहे, 'हे मिळालय आता, माताजी आम्हाला कळलं आहे. परमेश्वराचा आमच्यावर हात आहे. परमेश्वराच्या साम्राज्यात आलो आहोत. पण अजून थोडसं आम्हाला कमी वाटतंय.' 'काय बुवा, काय कमी वाटतंय?' 'अजून आम्ही कोणाला दिलं नाही. वाटून खाल्लं नाही. एकटेच खात बसलो आहोत.' महालक्ष्मी तत्त्व तुमच्यात जागृत होईल आणि हे जागृत झाल्यावर बरोबर तुम्ही संतुलनात, असंतुलनात नाही. संतुलनात हळूहळू आपली दीपशिखा वाढवली तर ती ब्रह्मरंध्रात जाऊन बसेल आणि संबंध तुमचं आयुष्य आलोकित होईल. आजपर्यंत कोणीही जगात झाले नाहीत असे महापुरुष तुमच्यातून निघणार आहेत. आजपर्यंत कोणीही विचारले नाहीत आणि जाणले नाहीत, असे महाकिमयागार तुमच्यातून निघणार आहेत. पण संतुलन नाही सोडायचं. पण जर तुम्ही संतुलन सोडलं तर हे प्रेम जे आहे, ते इकडे पडेल, नाहीतर तिकडे पडेल. नष्ट होईल. संतुलनात तुमची दीपशिखा उघडायची आहे आणि हे झालं पाहिजे, मग ह्या सगळ्याला अर्थ येतो.

हे जे आवाज होताहेत आणि हे ध्वनी निघत आहेत (फटाक्यांचे आवाज), ही त्याचीच गर्जना आहे. हे होणार आहे. कडकडणार आहे संबंध जग. दुंदुभी वाजणार आहेत आणि सगळ्यांना कळणार आहे की एक नवीन युग तयार होत आहे. त्या माणसात, त्याच्यात, कोणालाही, कोणत्याच प्रकारचा त्रास, त्रागा, संताप राहणार नाही. आणि परमेश्वराच्या साम्राज्यात त्याचे चमत्कार बघावे तितके थोडे आहेत. बघतच रहावं आणि काय बोलणार हे पाहिल्यावर!

अशी एक अत्यंत सुंदर मनःस्थिती होते. त्या आनंदाचा उपभोग तुम्ही सर्वांनी सतत मिळवावा. त्या सदिच्छेनेच मी इथे आज या पूजेला तयार झालेली आहे. मला पूर्ण आशा आहे, की आजच्यानंतर सर्व लोक मनोभावे आपल्यातील लक्ष्मी तत्त्व जपून ठेवतील. आणि त्यातून उगवणाऱ्या ह्या नवीन आकांक्षा ह्या महालक्ष्मी तत्त्वाच्या रूपाने बाहेर पडतील. त्या संतुलनात राहून पूर्णपणे समजून घेतील. व्यवहारात आणतील आणि पसरतील.

परमेश्वर आपणा सर्वांना ही दिवाळी सुखाची करो!

सगळ्यांना माझ्यातर्फे अनंत अनंत आशीर्वाद!

# ENGLISH TRANSLATION

## (Marathi Talk)

It is said in Marathi, “It needs persons of high quality standard or class, Jaati which also means the caste”. Which is Sahaja Yogis's class or caste? We have only one caste. It is said, “Yaa devi sarva bhuteshu jaati rupena sansthita” All have castes and they are numerous. Goddess has made many castes. One is where the people do not care for God. Discard it. Another one is where they are antagonistic to God. This also be discarded. Third one consists of the people who do not want God and are indulging into wrong type of activities. Let them go. Some more people are such that they are engaged with ritualism in the name of God for a number of lives and continue with it being unable to overcome despite repeated advice. Nevertheless some more people truly search for God. They have pure intelligence in this regard and clear perceptions as to what it means to achieve God. They belong to our caste and can join us.

Sahaja Yoga cannot be explained to every person. Special kind of people are necessary to understand Sahaja Yoga. On getting their realization Sahaja Yogis meet all types of people. Some are very affluent. Sahaja Yogis tell me, “Shri Mataji they are very rich people. They want to meet you”. So, what is further? They say, “Please allow us to meet Shri Mataji once.” So, what do they want? “Nothing , only to meet you. I tell those Sahaja Yogis,” Let them wait and see”. The Sahaja Yogis cannot understand why Shri Mataji has said so when those people are so rich. They are very rich but are not worthy of meeting me. They have money does not mean they have worthiness too.

Another Sahaja Yogis came and said, “ Shri Mataji he is a big politician. So please meet him. I said, “My Namaste to him from a distance. I have no time.” And how come Shri Mataji has specially walked in to meet just an ordinary lady. What you see as simple and ordinary I see it as extra-ordinary. What can I do? I will follow my intelligence. Sahaja Yogis also should have the same intelligence. You should not waste your time with useless people. You should approach only those who are searching God and are ready to promptly surrender to his feet.

Now you have lit this lamp and so many other lamps at this place. But if you show a lamp to a drunk or a possessed person, he will jump at you. So what is the need to show lamp such to persons. A large number of people exist in the world, who know that they are in dark and genuinely want to meet God. Yet another large number want to meet God because they think that it will be better if they can avail of some material gains, from it. Now I want to tell that material gains will be there, no doubt about it. It is for this reason that today we are performing the Puja to Shri Lakshmi because we want to face and overcome the anti-Lakshmi. Without that the anti-lakshmi will not go away from Pune the land of Punyas. What could be the main reason for the anti-lakshmi to stay in Pune?

The main reason is that we have to throw out the people who are sitting in all the temples of Shri Hanumana and Shri Ganessha. Sitting there they make money in the name of the deity and put marks on the peoples' foreheads. “Shri Mataji this seems to be a difficult job” Of course, it is! But we have remedies on these people in Sahaja Yoga. We should learn them and apply them. These people who sit in the temples, spoil the Ajnya Chakras, of all those who go there. By attacking the Ajnyas they destroy the people who have awareness. Hence these simple looking people have to be watched. Countries where such people are active have remained poor, because these people practice the black magic inside the temples. They have no fear for God and unhesitatingly play the black magic in the deity's shrine.

When I was at Kolkata seeing the condition over there, I wondered whether Sahaja Yoga would work there. Every person I came across had some Badha or the other .Poverty is so appalling, to such an extent, that Kolkata is like a province comprising a number of desolate towns and cities. When

asked those people” How are you in this condition? Did you go? “They answered, “Yes, we are Dikshits (or Dikhits as they say)” All over the place, all are Dikhits. So, Dikhits are bound to be associated with suffering people. However, it is not possible to tell them that whatever they are doing as Dikhits is wrong. They are all upstarts. It would have been all right if they were only taking money. But activities they indulge into are horrible. These weird acts take place at every shrine! You go to the Jerusalem temple, to the Mecca or the Mahalakshmi's temple. At every place these activities are carried out with which enters in the anti-Lakshmi. Shri Lakshmi's ways are such that if a badha arrives from this side Shri Lakshmi departs from the other side.

Secondly, it is addiction. Shri Lakshmi will never reside in that house where someone is given in to addiction. It is said that moment a bottle (of liquor) enters from this side, the Bai, ( Shri Lakshmi) leaves from the side. Not just liquor, but a variety of other addictions one takes to. It is true that Sahaja Yoga practice brings about de-addiction. So, if a little effort is made one can overcome all addictions. With addictions it is not just Lakshmi who will go away but also one will not get success in life. Further whatever success the person is having it will be short lived. Soon after Shri Lakshmi has left Shri Rajalakshmi and Shri Gruhalakshmi leave too. If a person takes to an addiction or succumbs to a temptation Shri Lakshmi abandons him. You may light any number of lamps Shri Lakshmi will not enter in the house. She can see, so she will stay outside itself. You do hard work to any extent, howsoever you offer the Arti to Shri Lakshmi, and recite the hymns, all will be futile. On the other hand you fill the pockets of those who advise you to do all these things, do this, do that etc and by following them you are reduced to this state. So first thing we should do is to discard all ideas by which we go to such people or take to wrong paths.

Now you will say that Shri Lakshmi never stayed in Saint Tukaram's house. You will say that he was not rich. He will not outwardly appear to be rich. All will say so, since he had no ornaments and jewelry. Then how did he have Shri Lakshmi? He possessed no wealth, but to know how rich he was you should read his biography. When Shivaji Maharaj reached to his door steps with ornaments and jewelry Saint Tukaram told him, “We are farmers, what will we do with ornaments? You please keep them because you are royal people, you should use them. See how rich he was! Look at a wealthy person around you. He may be highly wealthy but if you offer him an ornament, will he not feel tempted to take it? Show me one wealthy person who will not feel tempted. Leave my case. Others who are tempted, who have set their minds on having this, that are big beggars. The wealthier a person is bigger is he the beggar. They will come running to take their thing left behind although it may be worth a paisa or two. So, who is to decide whether they are rich or poor? So, in Sahaja Yoga, only those who are rich by mind are rich.

On the other hand, whichever house is visited, despite their poverty, they welcome with love and say, “Shri Mataji all we have is only this much. We have not prepared anything for you. A little “Bhakri” (Indian bread made of Jowar flour) is only left, kindly have it”. How rich it is felt! They offer with love whatever is available in the house and one relishes it. It shows their true affluence to have offered whatever available in the house. If a wealthy man's house is visited, they will first hide half of the things and say, “Will you have tea?” If you want, you have it otherwise they will take it away. How are they rich? Shabri aboriginal woman gave the berries to Shri Ram to eat and he highly praised them. Did he not have anything else to eat? It shows how rich Shabri was. Shri Ram, Shri Sita and Shri Lakshman came as her guests and respecting her wishes ate those berries that she had tasted (it is never done in India). This kind of opulence is the real affluence. Person can be affluent and live in his regality whether he has money or not.

However in Sahaja Yoga this is not allowed. Nobody will take you to Shabri's condition. In Sahaja Yoga Shri Lakshmi shall invariably come. Means absolutely it is Shri Lakshmi who will come. And all shall have the blessings of Shri Lakshmi, no doubt in it. It is not because you are paupers, but because people of the world should see. If they find you poor after joining Sahaja Yoga, nobody will come. So, no doubt you have to be blessed with Shri Lakshmi since it will tempt other people to join Sahaja Yoga. Without that those blinds will not see. Hence Shri Lakshmi has to be bestowed and you



shall also have her.

As soon as your Nabhi Chakra opens up you can have Shri Lakshmi. At Shri Lakshmi's place in the Nabhi Chakra, the first one is that of Shri Gruhalakshmi. We can say that Saint Tukaram's wife was short tempered. If she had been humble and believed in God Shri Lakshmi would probably have stayed in their home. So, Shri Lakshmi's arrival depends on the state of the Gruhalakshmi. If the Gruhalakshmi is affected by a badha and the husband is bears with it, Shri Lakshmi shall never stay with them. Or if the husband is drunkard and the wife becomes Pativrata (woman who has avowed to serve her husband regardless of his misconduct) serves him liquor, and even parts with her ornaments and the Mangalsutra and thereby pushes him into hell, Shri Lakshmi can never stay in their home. The Gruhalakshmi should be a glorious woman. Seeing her and her life the man should feel that somebody is home and even slightest misbehavior on his part will not be tolerated.

In the past men addressed their wives as “Maalik( owner) or Sahib due to the awe that the ladies carried. What was it due to? It was not due to shouting and screaming but it was owing to their glory. Her nobility, her maturity, her generosity, her dedication and her service, all these together gave her a kind of glory and character. All these qualities having now gone away, I do not know what name should be given to modern Gruhalakshmi or what she should be compared with. I cannot understand what is in their brains. It is agreed that service should be rendered to the husband, children, in-laws and other members of the family. However, it does not mean that all their dirty behavior, foolish deeds should be accepted or just to please them do anything they want or take to wrong ways. They say, “After all he is husband, Shri Mataji!” “So what?” “He is husband after all”. “Is it? Husband and you together.....I do not say further, but you have understood.

The Gruhalakshmi should be like a lotus. The lotus is Shri Gruhalakshmi's place. Always on the water surface, extremely delicate and complete support to Shri Lakshmi. The person should be like lotus. She should be Shri Rajalakshmi. She should not go begging from door to door, “Please, give me your sari to wear, for today”. “Where are you going?” “I want to show to the people”.

When the lady has a kind of self-esteem and dignity, without false ego or the hide and seek, Shri Rajalakshmi resides in her.( She feels to be so.) You may feel that since it is Shri Lakshmi's puja the lecture is on women, but it is not so.

Third is Shri Gajalakshmi. Shri Gajalakshmi means one should be innocent like Shri Ganesha who has his special form and is extremely innocent, despite his sharp intelligence. An elephant can discriminate right and wrong and has Subuddhi i.e. good intelligence means he very bright and his gait is not fast, he will never hurriedly walk. I have seen many women do not walk like woman, but they walk like horse. So much haste, catch this, catch that, run and run. On the other day somebody asked me,” Why do small children get blood cancer.” I said, “Go and see their mothers, they must be always in hurry.” Women who are always in haste can never have Shri Gajalakshmi. It does not mean that nothing is to be done, but whatever done has to be skilful and beautiful. Elephant is huge animal but while garlanding Shri Lakshmi he properly holds it in his trunk and gently put it on her neck, without touching her. This delicateness that housewives describe as “ Sugun, means good quality has to be acquired.

Despite having these good qualities, if men do not respect their wives and run after dirty women or give importance to women on road (women of low moral character) or on the other hand, are afraid of their wives who are shrews, Shri Lakshmi never stays in those homes. Also Shri Lakshmi can never reside in those men's homes who ill-treat their wives especially good natured wives.

Men think that honor of the family rests with women and men do not have such things. They believe that whichever way they behave, it conforms to Dharma. He does not know that casting an evil eye at others goes against Dharma. Of course this was all before the realization. After joining Sahaja Yoga, you have opposite outlook. Your outlook so changes that ideas that you had in the past or past temptations just do not occur to you. All these Lakshmis are thus awake in you. You may be anywhere, your attention will rise high like flame towards God and never go to the lower level. When you are in

this state, Shri Lakshmi shall reside in your house. They are numerous types.

You must be aware that Narsinh Bhagat's bill of exchange was redeemed. Shri Krishna constructed Sudama's house in the gold at Dwaraka, you must be knowing it. You also know that Shri Krishna protected Draupadi's chastity when she was being disrobed. Your lives shall always be full of such miracles. There will be daily new miracles. You will be amazed how those miracles confront you and bless you. These miracles take place only by the grace of Shri Lakshmi. There are various types of blessings.

I purchased a sari on the other day for Rs 3000. When I showed it to another person he said that the sari should cost minimum Rs 15000 in the market. I said, "No. I got it for only Rs 3000." This is called Shri Lakshmi's grace. Yet another person told me, "Shri Mataji, I had no money. I decided to go to Ganapati Pule but how to go there without money was the question. And I received letter, "Your this much amount is left balance with us which is returned." This is about money. But there are many more aspects. Suppose you take ill and tell me, "Shri Mataji, I am sick" and very next day you are all right. In astonishment your doctor asks, "How has it happened? I cannot believe as to how it can happen." This is Shri Lakshmi's grace.

Shri Krishna says, "Yogakshemam vahaamyaham." I take care of your Yoga and the Kshema, i.e. benevolence. The benevolence part of it comes by Shri Mahalakshmi's grace. It is not only financial benevolence. Had it been so and if you were sick, doctor would take all your money. Benevolence takes place from all sides and of all kinds. As the totality of all of it, your Mahalakshmi principle is awakened and the Mahalakshmi principle is the desire to be engrossed in the God Almighty.

The Mahalakshmi principle is; with all that you have received you say, "Shri Mataji we have received all this and have realized that we have God's blessings and we are now in the God's kingdom. But we feel that we are lacking in something. I ask, "What are you lacking in?" You say "so far we have not shared it with anyone. We are enjoying it alone without sharing it." The Mahalakshmi principle will thus be awakened and in you and will get you in the state of balance. Not in the imbalance. If in this state of balance the lamp flame (Spirit) is enhanced it will settle in the Brahmarandhra and enlighten your whole life.

Such great personalities, likes of whom have not so far been born in the world shall come from amongst you. Such alchemists (miracle makers) who are beyond knowledge and imagination shall come from amongst you. But you should never allow your balance to be disturbed. If it is disturbed the love shall scatter here and there and will be destroyed. Hence your lamp flame should open in the state of balance. It must happen. Only then all this shall have its meaning. These loud sounds (of cracker burning) are announcing that it is going to come about. The whole world is going to resound with it. The drum beats shall make it known to all that a new age is coming into existence. In that age no human being shall have any kind of afflictions, harassment, or resentment.

In the Kingdom of God there are miracles and miracles. One cannot stop watching them. One keeps watching those miracles and becomes speechless. Such a beautiful mindset is formed. You all should incessantly enjoy that bliss. It is only with this desire that I have agreed to have this Puja. I hope from today onwards all Sahaja Yogis shall sincerely preserve their Lakshmi Tattwa. The new aspirations emerging from the Lakshmi tattwa shall manifest in the form of the Mahalakshmi principle. Those shall be fully understood, implemented and propagated by Sahaja Yogis while maintaining their complete balanced state.

May God make it a very happy Divali to all.

My abundant and abundant blessings to all.